आपातकाल में सृजन फुलवारी

अर्चना लाल

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

अर्चना लाल

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-172-5
संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, अर्चना लाल
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY ARCHNA LAL
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	ख़्वाब (सरसी चंद)	6
2.	शहनाई (पदपादकुलक छंद)	7
3.	मीत (भुजंगी छंद)	8
4.	तनया (गीत)	9
5.	संज्ञाहीन (दोहागीत)	10
6.	शब्द बाण	11
7.	क्षणिकाएँ	12
8.	गाँव की भोर (कविता)	13
9.	इंतजार (कुकुभ छंद गीत)	14
10.	उम्मीद (ग़ज़ल)	15
11.	द्वंद्व (गीत)	16
12.	गमगीन (अतुकांत)	17
13.	माहिया छंद	18
14.	कुण्डलिया	20
15.	मुक्तक	21-22

ख़्वाब (सरसी चंद)

नैना मेरे चुप मत रहना, कह दो दिल की बात।
ख्वाब सुहाने जब भी देखे, बहते क्यों हर रात।।

कभी निराशा ने है जकड़ा, पर उम्मीदें साथ।
कभी हँसाते कभी रुलाते, कभी छोड़ते हाथ।।
संवेदित हैं मेरी पलकें, या दिल के जज़बात।
ख्वाब सुहाने जब भी देखे, बहते क्यों हर रात।1।

प्रेम हृदय में भर कर देखूं, सपने सुखद हजार।
पर जाने क्या होता इसको, खोले मन के द्वार।।
चंद लकीरें आई नीचे, मिली यही सौगात।
ख्वाब सुहाने जब भी देखे, बहते क्यों हर रात।2।

रोम-रोम में पुलकित होता, प्रिये प्रेम का राग।
कंपित होती काया मेरी, और प्रबल अनुराग।।
मेरी अँखियों ने सपनों का, खूब निभाया साथ।
ख्वाब सुहाने जब भी देखे, बहते क्यों हर रात।3।

नहीं कहो यह निष्ठुर जीवन, तुम मेरी पहचान।
सभी पुराने रिश्ते छूटे, टूट गये अरमान।।
सदा समर्पित रहती आँखे, हृदय सहे आघात।
ख्वाब सुहाने जब भी देखे, बहते क्यों हर रात।4।

शहनाई (पदपादकुलक छंद)

घनघोर घटा जब हो छाई,
तब यौवन भी ले अँगड़ाई।
तू हौले से बह पुरवाई
हिलती है प्रिय की परछाई।1।

धर रूप सुहावन वह आया
फिर दिल को मेरे बस भाया
मत देखो मेरी अँखियों में
चर्चा होती है सखियों में।2।

मैं छोड़ सखी की सब बातें
बस याद करूँ पूर्णिम रातें
हूँ नटखट थोड़ी शरमाई
प्रिय बजवा दे बस शहनाई।3।

जब खिलती बागों में कलियाँ
अरु अमिया पर हो मंजरियाँ
ऋतू देख बहुत मैं हरषाई
यदि आये पिया अँगनाई।4।

मीत (भुजंगी छंद)

रचे रास श्यामा नचे राधिका।
ख़ुशी में सभी झूमती बालिका।
कहे बालिका की यही प्रीत है।
तू ही प्रेरणा है तूही मीत है।1।

तुम्हारे लिए छोड़ती हूँ जहाँ।
चलो मीत मेरे ख़ुशी है वहाँ।
मिटाना हमें है लकीरें सभी।
दुआ तो करेंगें खुदाया कभी।2।

सभी दर्द भूला मुझे थामना।
नहीं हो दुखों का यहाँ सामना।
कभी याद मेरी करे तो बता।
रहूँगी तुम्हारी यही है खता।3।

तनया (गीत)

धन्य हुई माँ तनया तेरी, चुनरी तेरी जब लहराई..!!!

छुप जाने को आतुर मन था
जब हैवानों ने जकड़ा था।
देख कहाँ पाई थी बाधा
कितने हाथों ने पकड़ा था
विरक्ति ने भावों को मोड़ा, अंतर्मन में व्यथा समाई।।
धन्य हुई माँ तनया तेरी, चुनरी तेरी जब लहराई.....!!!

बाधित पग उठते फिर कैसे
जब रक्त धरा ने सोखा था
हृदय विदारक दृश्य सभा का
यह अपनों का ही धोखा था
सत्य-असत्य का पाढ़ पढ़ाकर, रिसते घावों को सहलाई।।
धन्य हुई माँ तनया तेरी, चुनरी तेरी जब लहराई.....!!!

मर्म प्रेम का जब मैं समझी
तेरी मधुर छवि निराली थी
छोड़ चली कर अंबर सूना
बिन आँसू आँखें ख़ाली थी
छोर पकड़ आँचल वह सुंदर, भूल कहाँ वो पल मैं पाई।
धन्य हुई माँ तनया तेरी, चुनरी तेरी जब लहराई...!!!

संज्ञाहीन (दोहागीत)

विरह वेदना में बहे, नैनन से मम नीर।
सुन्न हृदय अब हो गया, क्या समझे प्रिय पीर...

पाई ऐसी जिंदगी, बदल न पाई रेख।
बीत गए मधुमास के, क्षण अदभुत यह देख।।
शून्य जगत में खो गया, जीवन का उन्माद।
हृद के टुकड़े में मगर, रही शेष बस याद।।
मन बोझिल अभिशप्त सा, रखती कैसे धीर।
सुन्न हृदय अब हो गया,..

अंतस में उठती रही, हर क्षण इक आवाज।
तोड़ बेड़ियाँ पाँव की, बनती मैं परवाज़।।
शुभ का सूरज फिर मुझे, भर देता शुभ ओज।
नहीं बहे नित नैन अब, खत्म करूँ सब खोज।।
क्षुब्ध निशाचर सी रही, मेरी यह तकदीर।
सुन्न हृदय अब हो गया,..

मौन मुखर होते रहे, मेरे सब जज्बात।
गहन निराशा में सदा, बीती काली रात।।
हृदय हीन से जब हुआ, नैना देखो चार।
रौंदा मुझको इस तरह, जैसे अबला नार।।
छंद लिखूँ क्या प्रेम पर, कहकर ग़ालिब मीर।
सुन्न हृदय अब हो गया, क्या समझे प्रिय पीर।।

शब्द बाण

मेरे सपनें मुझको हरपल, देते नहीं सहारा।
चाहा जिसको दिल से देखो होता नहीं हमारा।।

हठी दर्द भी कहता मुझको,
आँसू नहीं बहाना।
रोती क्यों है पगली इतना,
बदला बहुत जमाना।
व्यथा कथा जिसको भी कहती, करता वही किनारा..!
चाहा जिसको दिल से देखो, होता नहीं हमारा..!!

दौड़ रहा है रग-रग में बस,
श्रापित रक्त पसीना।
शब्द बाण ऐसा है छोड़ा,
छलनी है बस सीना।
व्यर्थ राग मैं छेड़ रही हूँ, आया नहीं दुबारा...!
चाहा जिसको दिल से देखो, होता नहीं हमारा..!!

तप्त रात अब कटती कैसे,
जब भी उसे बताया।
देख तमाशा मेरे ह्रद का,
हँसकर दूर हटाया।
व्यंग बाण सा हँसना उसका, लगता है कब प्यारा..!
चाहा जिसको दिल से देखो, होता नहीं हमारा...!!

क्षणिकाएँ

1.
जिंदगी.. क्यों रूठ जाती हो..

कितने भाव है तुम्हारे..
कैसे सहेजूँ तुम्हें...
आगोश में...
आँखों में...
हृदय में...या
साँसों में....
पर तुम टिकती कहाँ...?

उत्तेजना के भाव...
कमजोर क्षण के उद्वेग.......

2.
लौट आओ जान....!

आँखें पथराई
आँसुओं के वेग को सहती नहीं
वजूद दाव पर लगा कर
पा लूँ उसको या इंतजार करूँ...?
पथराई आँखों से
उसका... जिसने इन्हीं आँखों में...
हजारों ख़्वाहिशों को पनपने दिया
आगोश में लेकर
सहलाकर, सवाँर कर,

फिर क्यों ये आँखे पथराई
जिंदगी करीब तू आ गई
शायद..?

3.
वक्त

वक्त की परवाह हम
करते नहीं....
सब कुछ छोड़ देते हैं, वक्त पे..
और वक्त... कभी हमारा,
तो कभी किसी और का...!!
ये दौड़ है भाई...जिंदगी की...!!

तमाशबीन बने रह गये....
वक्त कब का भाग चुका है...
आह...आधारहीन संताप....!

4.
रेत

मैंने मुट्ठियों को कसा....
ज़ोर-ज़ोर से कसा...
मगर ऐ रेत तुममें तो
गज़ब की ताकत है....!!
तू फिसलती गई..फिसलती गई..
इसे क्या समझूँ
अपनी किस्मत..
या धोखेबाजी..!

दो पल तो ठहर जाती...
ऐ... रेत......!!
धूमिल हो जाते आँसू....!

गाँव की भोर (कविता)

चली जब मंद पुरवा तो,
फिजा फिर झूम लहराई।
हुआ है रम्य नभ देखो,
हवा ने गंध फैलाई।।

सुहानी भोर की बेला,
सुलभ गाँव की अँगनाई।
सखी दो गागरी लेकर,
भरन को नीर हैं आई।।

मजर कर आम है लटका,
कोयली कूक कर गाई।
यहाँ काकी बहिनिया में,
बड़ी ही प्रीत गहराई।।

कहीं पर बांग दे मुर्गा,
कहीं पर गाय रंभाई।
परस्पर साथ मिलकर सब,
रहें जैसे बहन भाई।।

छटा का रूप मनहर सा,
किरण बन ओज लहराई
दिवा आता खुशी लेकर,
सभी से प्रीत अपनाई।

इंतजार (कुकुभ छंद गीत)

गले लगा कर अर्ध सुधा से, सहज मुझे सहलाओगे।
सज-धज कर बैठी हूँ प्रियतम, एक बार तो आओगे।।

नित्य तुम्हारे दर्शन को ही, सजती और सँवरती हूँ।
नैनों में काजल भर कर फिर, नयन चार मैं करती हूँ।।
छवि उभरी है अंतर्मन में, पलकें अपलक रहती है।
तड़प हृदय में है मृदु ऐसी, कब वियोग यह सहती है।।
सभी सजावट झूठी लगती, कब तक यूँ तड़ पाओगे।
सज-धज कर बैठी हूँ प्रियतम, एक बार तो आओगे।।

मधुर-मिलन की बेला है यह, स्वप्न सलोने पलते हैं।
बिन तेरे मधुमास बीतता, दिन सूने से खलते हैं।।
घन-घनघोर घटा घिर आई, सावन फिर भी रीता है।
तुम बिन व्यर्थ हुआ है जीना, पलकों में पल बीता है।।
मेरी यह मृग तृष्णा को तुम, बोलो कभी मिटाओगे।
सज-धज कर बैठी हूँ प्रियतम, एक बार तो आओगे।।

कहते थे मेरी आँखों में, रूप तुम्हारा बसता है।
तुम हो मेरी हृदय-रागिनी, प्राण वहीं पर रहता है।।
रंग सुर्ख मैं ओढ़े बैठी, नैना कमल सरीखे हैं।
कोहिनूर वो कहने वाले, नूर मगर यह फीके है।।
महल अटारी छोडो साथी, मनकी बात बताओगे।
सज-धज कर बैठी हूँ प्रियतम, एक बार तो आओगे।।

उम्मीद (ग़ज़ल)

भले कैद में ये उजाले हुए हैं।
मगर हम भी उम्मीद पाले हुए हैं।

जरा सी हँसी को ही देखे जमाना
है रोदन को अपनी ही टाले हुए हैं।

भुलाना तो चाहें मगर याद आते,
वो जख्मों पे पड़ते से छाले हुए हैं।

सवालों के घेरे में घिरते गये अब,
कहें क्या कि किस्मत के काले हुए हैं।

न रुकती हँसी है न रुकते ये आँसू,
समझना यही की दिवाले हुए हैं।

ग़मों को मिटाने कि कोशिश रही बस,
हलक में ये मदिरा को डाले हुए हैं।

चलो आज चलना है उसकी गली में,
जहाँ सब मुहब्बत सम्भाले हुए हैं।

द्वंद्व (गीत)

द्वंद्व अनेकों पलते देखे, संवेदनहीन विचारों में।
सपनें सारे पल में बिखरे, दिल जलता है अंगारों में।

मिलन हुआ था जब दोनों का, मन था उच्छल अरु उन्मादी।
भावों के उन्मुक्त भवँर में, शब्द बने थे यूँ फ़रियादी।
बाहों के घेरे में रह कर, बस खो जाती थी तारों में...!
द्वंद्व अनेकों पलते देखे,.........

कहाँ गया वह प्यार सुनहरा, और सुखद मधुरिम सी बातें।
कटते है नहि दिवस दिवाकर, कुछ तो प्रियतम कह के जातें।
नजरें मेरी निशिदिन ढूँढे, तुमको हर बाग़ बहारों में....!!
द्वंद्व अनेकों पलते देखे,.......

सघन रात है काली कितनी, धुंध गजब है इन राहों में।
भूल भुलैया बनी जिंदगी, सिसकी ही है बस आहों में।
वो पल फिर से याद करो तुम, पाओगे हमें नजारों में....!!
द्वंद्व अनेकों पलते देखे,......!

गमगीन (अतुकांत)

हवा गमगीन...
फ़िजा गमगीन...
नजारा है यहाँ उजड़ा
ठहर जा ऐ कदम रुक जा...
बहारा है अभी रूठा....!!

करुण है चीख अंबर की
बिछा है दर्द और मातम
नजर तो फेर ले लेकिन...
हृदय से वास्ता का क्या...!!

बुझे जो दीप हर घर के
अंधेरी रात है सूनी....
कही से आ रही है इक
सिसकती आह की ध्वनि
जरा सोचो मेरा यही रास्ता है क्या...!!

धरा अपनी गगन अपना
जहाँ भी है बहुत प्यारा
मगर जो की यहाँ गलती
गिरेंगे गर्त में ही सब...
मगर आहिस्ता ही क्या....!!

माहिया छंद

(1)
नभ के अद्भुत तारे
चँदा संग बैठे
सुन्दर लगते सारे।।

(2)
छाए जब भी बदली
ऐसा फिर लगता
बन आँसू यह पिघली।।

(3)
जीवन की सब राहें
अगर कठिन हो तो
मिलता दुख औ आहें।।

(4)
साथी तुम सँग जीना
अरमाँ है अपना
है बाहों में मरना।

(5)
कान्हा तेरी नगरी
नाचे सब गोपी
राधा भरती गगरी।।

कुण्डलिया

1.

देना अपनों को सदा, मान और सम्मान।
मिलनसार व्यक्त्तिव की, यही एक पहचान।।
यही एक पहचान, सुखद फिर अपना जीवन।
अनुपम यह परिवेश, सतत महके घर आँगन।।
कहे अर्चना सत्य, ज्ञान वृद्धों से लेना।
रीत-प्रीत अरु प्यार, सभी अपनों को देना।1।

2.

चाँद अधूरा सा लगे, घनी अँधेरी रात।
दीद करूँ कैसे प्रिये, जुबां दबी हर बात।।
जुबां दबी हर बात, दर्द हिय में है पाले।
व्यर्थ वेदना राग, टूटते है सब जाले।।
कहे अर्चना लाल, ख़्वाब होता कब पूरा।
ईद रहे या दूज, दिखे है चाँद अधूरा।2।

3.

दोहा लिखने मैं चली, नहीं मिला वह भाव।
ऐसा मुझको लग रहा, अब निश्चित अलगाव।।
अब निश्चित अलगाव, फिरूँगी मारी-मारी।
मोहन-मोहन नाम, रटूँगी मैं बेचारी।।
निष्ठुर है निर्मोह, हृदय जिसने है मोहा।
भरा दृगों में नीर, लिखूं मैं कैसे दोहा।3।

4.

आओ कुचलो नाग फन,जो बैठा हृद बीच।
ड्सकर उसने आज तो, बना दिया है नीच।।
बना दिया है नीच, जात बदली इंसानी।
चोला पहन सफेद, खूब करता मनमानी।
पहचानो यह भेष, सत्य को बस अपनाओ।।
मिटा दम्भ अरु द्वेष, नाग को कुचलो आओ।4।

5.

देख विधाता ने दिया, कोमल मन अरु रूप।
कर्म अगर उत्तम रहे, रहता सुखद स्वरूप।।
रहता सुखद स्वरूप, ख़ुशी के दीप जलाओ।
जो गरीब लाचार, मदद उनको पहुँचाओ।
रहो ख़ुशी से साथ, यही तो सबको भाता।
समझो जीवन सार, रहे हैं देख विधाता।5।

मुक्तक

1.

धुंध छाई है हृदय पर, इस घनेरी रात में।
उर हुआ है आज घायल, बेवजह की बात में।
सर्द का आलम न पूछो, दर्द ही ठिठुरन बनी
नम नयन भी हँस रहे हैं, आज की बरसात में।।

2.

चली जब शीत की लहरें, उठा है ज्वार फिर दिल से।
बढ़ी जब कँपकँपी उर की, निभाती प्यार फिर दिल से।
कभी बनता रजाई वो, कभी बनती बिछौना मैं
हटाया अर्थ का मुद्दा, गई मैं हार फिर दिल से।।

3.

आ जाओ क़ासिद यहाँ, दे दो एक संदेश।
नेह निमंत्रण पत्र में, भेज रही परदेस।।
पिया मिलन की आस है, व्याकुल है दो नैन-
सिसक रही है जिंदगी, शिकन बची है शेष।।

4.

चाँद अधूरा सा लगे, होती है जब ईद।
चाहत है दिल की यही, पूर्ण करूँ मैं दीद।।
ख़्वाब सुहाने देख कर, जगा रही मैं आस-
दूर रहे या पास तू, रहती है उम्मीद।।

5.

थी हवा भी आज बहकी, लुट गई जागीर है।
इश्क़ में वह मनचली सी, बस नयन में नीर है।
सर्द रातों का मिला था, आज उसको तोहफा-
चाह थी परवाज़ की पर, पाँव में जंजीर है।।

6.

आकर्षित करता हमें, कली भँवर का प्यार।
छुप कर भँवरा देखिये, पीता है रस धार।।
मस्त पवन सँग डोलता, बैठे हर इक डाल-
इन दोनों के प्यार का, अदभुत है संसार।।

7.

रहे जब नेह में दोनों, मिलेंगे व्यंजना बनकर।
सहारा प्यार का होगा, भले हो कल्पना बनकर।
उजाला ही उजाला हो, जहाँ में ये जहाँ जायें-
हृदय में वास है ऐसा, रहे संभावना बनकर।।

8.

बहारों नाम लो उसका, फ़िजा गुलशन करो अब तो।
बिखेरो मोतियों को अब, नया जीवन करो अब तो।
सुखद रितुराज का मौसम, पहन परिधान पीला सा-
धरा को सींच कर लेकिन, सुमन मधुवन करो अब तो।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

अर्चना लाल

क्यू-३३/२/२
छोटा गोविन्दपुर, हाउसिंग कॉलोनी,
जमशेदपुर झारखंड-८३१०१५

Email- Archanalal25jan@gmail.com
Mobile - 9955492232

हम अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कोई न कोई माध्यम या जरिया ढूंढते रहते है... कभी अपनी बातों को बोल कर या अभी अपनी बातों को लिख कर...! और अगर हम रचनाकार है तो हमारी दृष्टि समाज के हरेक पहलू पर होती है...

अभी के समय में जब आपातकाल है. . हम सभी के अंदर कोरोना का डर समाया हुआ है... फिर भी सृजनशीलता की एक लौ हमें निराशाजनक परिस्थितियों से उबार कर कुछ अच्छा करने को प्रेरित करती है... लेखनी की धार को तेज करते हुए... इस आपातकाल में भी सृजन ही हमें निराशा से बाहर निकालता है... हम अपनी अभिव्यक्ति को कलम के माध्यम से बेखुदी व्यक्त करते हैं...!

इस प्रक्रिया में हमारा साथ अन्तरा शब्दशक्ति ने हमें सृजन से जोड़ कर क्रियाशील बनाया है... हम उनके आभारी है... यह एक सरहनीय पहल है...!

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क – 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-172-5

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/